श्रीभगवान् हैं। परमार्थ के प्रारम्भ में भोगासक्ति को हटाने के लिए प्रयत्न करते हुए साधक की प्रवृत्ति कुछ-कुछ निर्विशेषवाद की ओर रहती है। परन्तु अधिक उन्नति करने पर वह जान जाता है कि पारमार्थिक दिव्य जीवन में दिव्य क्रियाएँ होती हैं, जिनका नाम भक्तियोग है। इस अनुभूति से वह श्रीभगवान् में अनुरक्त हो जाता है और उनके श्रीचरणों में सर्वात्मसमर्पण कर देता है। ऐसी अवस्था में वह समझ सकता है कि भगवान् श्रीकृष्ण की कृपा सर्व-सार-सर्वस्व है, श्रीकृष्ण स्वयं सब कारणों के परम कारण हैं, यह सृष्टि उनसे स्वतन्त्र नहीं है। वह अनुभव करता है कि प्राकृत-जगत् चिद्विलास की उलटी छाया है और सब कुछ परमेश्वर श्रीकृष्ण से सम्बन्ध रखता है। इस प्रकार वह सब कुछ वासुदेव भगवान् श्रीकृष्ण के सम्बन्ध में ही चिन्तन करता है। वासुदेव को सर्वत्र देखने के इस अभ्यास से परम लक्ष्य के रूप में भगवान् श्रीकृष्ण के प्रति अति शीघ्र उसका पूर्ण समर्पण हो जाता है। इस प्रकार के शरणागत जीव बहुत दुर्लभ हैं।

श्वेताश्वतरोपनिषद् के तीसरे अध्याय में इस श्लोक का उत्तम वर्णन है—'इस देह में बोलने, देखने, सुनने और चिन्तन आदि करने की शक्तियाँ हैं; पर श्रीभगवान् से सम्बन्ध के बिना ये सब बिल्कुल व्यर्थ हैं। वासुदेव सर्वव्यापक एवं सर्वरूप हैं; इसलिए पूर्ण ज्ञानी भक्त उनके चरणों में प्रपन्न हो जाता है।' (दृष्टव्य गीता ७.१७, ११.४०)

कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाः प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः।
तं तं नियममास्थाय प्रकृत्या नियताः स्वया।।२०।।

कामैः=कामनाओं द्वारा; **तैः**=उन; **तैः**=उन; **हृतज्ञानाः**=हरे हुए ज्ञान वाले; **प्रपद्यन्ते**=शरण लेते हैं; **अन्य**=अन्य; **देवताः**=देवताओं की; **तम्**=उस; **तम्**=उस; **नियमम्**=विधान का; **आस्थाय**=पालन करते हुए; **प्रकृत्या**=स्वभाव द्वारा; **नियताः**=वश में हुए; **स्वया**=अपने।

अनुवाद

कामनाओं ने जिनके ज्ञान को हर लिया है, वे ही अन्य देवताओं की शरण लेकर अपने स्वभाव के अनुरूप उपासना के विधि-विधान का पालन करते हैं।।२०।।

तात्पर्य

जो सम्पूर्ण सांसारिक पापों से मुक्त हो चुके हैं, वे जीव श्रीभगवान् के शरणापन्न होकर उनकी भक्ति करते हैं। जब तक पापों का पूर्ण शोधन नहीं हो जाता, तब तक वे स्वभावतः अभक्त ही रहते हैं। परन्तु चाहे विषय-वासना से दूषित अवस्था में ही क्यों न हों, जो भगवान् के उन्मुख हो जाते हैं, वे जीव बहिरंगा प्रकृति (माया) की ओर अधिक आकृष्ट नहीं होते। वे सच्चे लक्ष्य की ओर अग्रसर हो रहे हैं, इसलिए शीघ्र प्राकृत काम-विकार से पूर्ण मुक्त हो जायेंगे।